http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 6, 10-13

Article ID:438

कद्दुवर्गीय सब्जियों के प्रमुख कीट एवं रोग प्रबंधन

राज कुमार फगोडिया, डॉ. बाबू लाल फगोडिया, डॉ. सुरेश कुमार और हेमन्त गुर्जर

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर एवं महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर

वर्तमान में भारत, चीन के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा सब्जी उत्पादक देश है। भारत में जलवायु एवं मिट्टी की व्यापक विविधता उपलब्ध होने के कारण, सब्जी की विभिन्न किस्मों की खेती किए जाने की संभावनाएँ अधिक हैं। सब्जियों में नाशीजीव प्रकोप के कारण 30-40 प्रतिशत तक उपज का नुकसान होता है। नुकसान को कम करने और इन नाशीजीवों का नियंत्रण करने के उद्देश्य से किसान सामान्यतया रासायनिक दवाईयों का अधिक छिड़काव करते हैं जिससे रसायनों के अवशेष फसल उत्पादों पर रह जाते हैं व जिसके कारण पर्यावरण तथा स्वास्थ्य को अत्यधिक नुकसान होता है। सब्जी फसलों में जहरीली दवाइयों के प्रयोग को कम करने के उद्देश्य से नाशीजीव से होने वाले नुकसान का प्रबंधन करने हेतु एक समेकित पद्धति की कमी प्रायः महसूस की गई है।

प्रमुख रोग

सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बाः यह रोग अधिकतर खीरा, करेला और लौकी की पत्तियों पर पाया जाता है। छोटे गोलाकार धब्बे जो बीच में से स्लेटी रंग के होते हैं पत्तियों पर प्रकट होते हैं। गंभीर रूप से फैलने पर पत्ते गिर जाते हैं। फल का आकार कम हो जाता है। बरसात के मौसम के दौरान इसका संक्रमण अधिक होता है।

फ्यूजेरियम म्लानिः यह बीज और मिट्टी जनित म्लानि रोग है। इस रोग के लक्षण लौकी और खरबूजे में फूल और फल अवस्था में प्रकट होते हैं। पूरा पौधा पीला हो कर झुक जाता है व मुरझा जाता है।

चूर्णिल आसिताः यह रोग लगभग सभी कद्दू वर्गीय सब्जियों में पाया जाता है और जिसके कारण काफी हानि होती है। सफेद पाऊडर जैसी विकसित फफूंद पत्तियों, तनों और लताओं पर आसानी से पहचानी जा सकती है। प्रभावित पत्तियां मुरझा कर सूख जाती हैं। चूर्णिल आसिता फलों की गुणवत्ता को प्रभावित करता है और फल का आकार और संख्या कम होने से उपज में कमी आ जाती है।

एंथ्राक्नोजः पीले रंग के पानी से भीगे धब्बे फल पर दिखाई देते है जो बाद में बीच में से सूखे काले भूरे रंग जैसे दिखाई देते हैं। फल पर धब्बे गोलाकार संकुचित और गहरे रंग के किनारों वाले होते हैं जिसमे बहुत संख्या में नुकीले आकार के फल निकाय होते हैं।

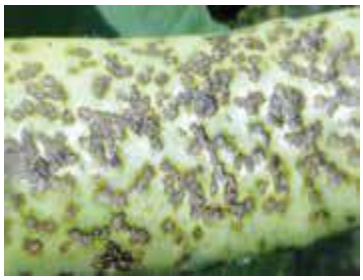

जीवाणुज रोगः यह जीवाणु कद्दू वर्गीय सब्जियों के लिए एक अवरोध है जिसके कारण पत्ती मोड़क, पीला मोजेक और स्टनटिंग जैसे रोग विकसित होते हैं। ककड़ी मोजेक, पीला मोजेक के लक्षण कोमल पत्तियों पर गहरे हरे रंग के धब्बे के रूप में प्रकट होते हैं।

प्रमुख कीट

फल मक्खीः यह एक हानिकारक कीट है जिसके कारण फसल में 80.85 प्रतिशत तक का नुकसान देखा गया है। अधिकतम नुकसान जुलाई-अगस्त के दौरान होता है। सगर्भा मादा सफेद, सिगार के आकार के अंडे फूल या नरम फलों में देती है। नवजात कीड़े फलों के गूदे में छेद कर प्रवेश करते हैं व टेढ़ी मेढ़ी सुरंग बना कर फल को अन्दर से खा जाते हैं और उन्हें अपनी कीटमल से दूषित करते हैं और कवक और बैक्टीरिया के अन्दर जाने के लिए रास्ता बना देते हैं। जिस कारण फल सड़ जाते हैं व खोखले होकर परिपक्व होने से पहले ही गिर जाते हैं।

ककड़ी कीटः ये पीले से गहरे हरे रंग के होते हैं। लार्वा के शरीर के दोनों तरफ सफेद धारी होती है। सूंडी इकट्ठी होकर पत्तियों के क्लोरोफिल भाग को कुतर कर उन्हें जालबद्ध कर देती हैं। जैसे ही फल विकसित होना शुरू होता है, लार्वा सतह में उथले छेद को चबा लेते हैं।

लाल पम्पकिन बीटलः यह लौकी का एक हानिकारक कीट है। वयस्क भृंग जमीन के ऊपर पौधों की क्षति के लिए मुख्य रूप से पत्ते, फूल और फल पर आक्रमण करने के लिए जिम्मेदार हैं। ये पौधों व फलों में छेद करते है जिससे पूर्ण विकास न होने के कारण पौधा मर जाता है। भारी प्रकोप होने की स्थिति होने पर दुबारा से बुवाई किया जाना आवश्यक है। लार्वा मिट्टी में रहते हैं और जड़ों और पौधे के तने को खाते हैं।

सफेद मक्खीः निम्फ और वयस्क मुख्य रूप से पौधों के रस को पत्तियों के नीचे से चूसते हैं और मधुरस स्रावित करते हैं जिससे पत्ती के ऊपर काली फफूंद विकसित हो जाती है जिसके कारण पौधों द्वारा प्रकाश संश्लेषण कम हो जाता है। उनके भक्षण द्वारा हुए प्रत्यक्ष नुकसान के अलावा ये वायरल रोगों के जनक के रूप में भी काम करते हैं।

समेकित नाशीजीव प्रबंधन

- ट्राईकोडर्मा 10 ग्राम प्रति किग्रा की दर से बीजोपचार करें।
- फल मक्खी के बृहत् क्षेत्र में प्रबंधन के लिए क्यूल्योर 10 प्रति एकड़ की दर से स्थापित करें। लकड़ी के छोटे टुकड़े को इथनोल़+ क्यूल्योर + कीटनाशी (डीडीविपी) 8:2:1 के अनुपात के घोल में 48 घंटे तक डूबोयें।
- फल मक्खी के प्युपे व परजीवियों को धूप में लाने के लिए मिट्टी को समतल करें।
- फल मक्खी के प्रबंधन के लिए पीले रंग के चिप चिपे ट्रैप को 10 प्रति एकड़ की दर से स्थापित करें।
- नीम 300 पीपीएम का 10 मिली प्रति लीटर की दर से लौकी के लाल पम्किन बीटल के लिए फसल की प्रारम्भिक अवस्था में 2 छिड़काव करें।
- लौकी और ककड़ी की प्रारम्भिक अवस्था में लाल पम्किन बीटल के प्रबंधन के लिए डीडीविपी 76 ईसी का 500 ग्राम प्रति हेक्टेयर अथवा ट्राईक्लोरफोन 50 ईसी का 1.0 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकता अनुसार छिडकाव करें।
- सूत्रकृमि प्रबंधन के लिए नीम खली का 250 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से

अवश्यकता अनुसार प्रयोग करें।

- मृदुल आसिता व नमी में कमी लाने व हवा के आसान आवागमन के लिए ककड़ी को बांस के सहारे या ग्रीन हाऊस में लगाएं।
- चूर्णिल असिता और एन्थ्राक्नोज के प्रबंधन के लिए कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी 300 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से आवश्यकता अनुसार छिडकाव करें।
- लोकी में एन्थ्राक्नोज के प्रबंधन के लिए थायोफिनेट 70 डब्ल्यूपी का 1430 ग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से 750 लीटर पानी के साथ प्रयोग किया जा सकता है।
- ककड़ी में मृदुल आसिता के प्रबंधन हेतु अजोक्सीट्रोबीन 23 प्रतिशत का 500 मिली की दर से या साइमोक्सनिल 8 प्रतिशत + मेनकोजेब 64 प्रतिशत का 1.5 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी के साथ आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। कद्दुवर्गीय सब्जियों में एन्थ्राक्नोज और मृदुल आसिता के प्रबंधन हेतु जिनाब 75 डब्ल्यूपी का 1.5-2.0 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग किया जा सकता है और कद्दुवर्गीय सब्जियों में मृदुल आसिता के प्रबंधन हेतु अमेक्टोडसि + डाईमेथोमॉर्फ 20.27 प्रतिशत डब्ल्यू/डब्ल्यू एससी का 420-525 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी के साथ आवश्यकता अनुसार छिडकाव करें।
- करेले और खीरे की लाल मकड़ी के प्रबंधन के लिए डाईकोफोल 18.5 एस सी का 1.5 ली प्रति हेक्टेयर की दर से छिडकाव करें। पत्तियों में छिड़काव की नमी बनाये रखने के लिए स्टीकर (0.1 प्रतिशत) का प्रयोग आवश्यक है। सफेद मक्खी, पर्ण सुरंगक, थ्रिप्स, लाल पम्पकिन बीटल के लिए साईएन्ट्रानीलीप्रोल 10.8 ओडी का 900 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से 500 लीटर पानी के साथ छिड़काव करें।
- मिट्टी में बोरोन की कमी दूर करने के लिए 10 किग्रा प्रति हे की दर से बोरेक्स का प्रयोग करें। बोरेक्स का 100 ग्रा प्रति 100 ली की दर से पर्ण छिड़काव भी किया जा सकता है।